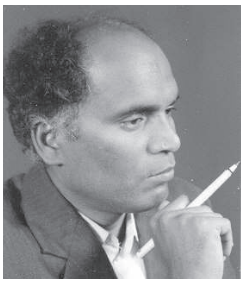

# शांबरी

वासुदेव

जाड़े की सुबह गरीब के बच्चे की तरह ठंड से कांप रही थी। हालांकि सुबह का छौना सूरज क्षितिज को लांघकर ऊपर तक चढ़ आया था, फिर भी हवा में कंपकंपी कम नहीं हुई थी। हां, कुनकुनी धूप देह को सुकून जरूर पहुंचाने लगी थी। वहां एक बूढ़ा तलमलाता हुआ आया और वहीं पुआल के ढेर पर धम्म से बैठ गया। वह नशे में था और 'अल-वल' बोल रहा था, 'इसार के औरे कोय  दिकू आलक रेंजर बनके।... हमरे केर कुटुम्ब में तो एसन बुझाएला कि रेंजर के खकराए खाए गेलक! अब व दिकू-मन गाछ काटबै और जेहेल जाबै हमर आदमी-मन।'

अब तक वहां एक दूसरा वृद्ध भी आ गया था देह सेकने। वह खैनी मल रहा था। उसने टोक दिया,'विहाने-विहाने के नाके गरियायक लइगहा नेता' उसने खैनी झाड़ते हुए आगे कहा, 'जेबेरा अपन राइज बनी, से बेरा अपन रेंजरों होई। तब न गाछ-वृक्ष कटी न अपन आदमी जेहेल जाएबै।' उसने खैनी वाला हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया और बची हुई खैनी को खुद फांक गया, फिर जीभ की मदद से होंठ में दबाने लगा।

नेता खैनी को फांकते हुए बोला, 'नाई। तब तो औरो गाछ कटाई और बेसी मन जेहेल जाबै!... तू सम झेले...?' इसबार वृद्ध चुपा लगा गया क्योंकि वह समझ गया था कि यह सब नेता नहीं बल्कि उसके अंदर की हाड़ी-दारू बोल रही है। इसलिए उसने उस हालत में उससे मुंह लगाना ठीक नहीं समझा। तब तक वही बोल पड़ा,' नेता हम हई न कितोय?... आपन राइज कैसे चली से हमी जानीला.... तोयका जानबै रे?' वह गुस्सा गया था। पर तब तक वह वहां से घसक गया था। लेंकिन नेता वहीं पुआल के ढेर पर लेट गया और फिर से रेंजर को गालियां देने लगा। फिर धीरे-धीरे वह निंदियाने लगा।

दोपहरी ढले जब उसकी नींद टूटी, तो तब तक उसका नशा तो फट चुका था; रेंजर का नाम दिमाग से नहीं गया था। उसने आंखें खोलकर आकाश की ओर देखा-शाम ढलान पर थी। वह हड़बड़ा कर उठा और तेज कदमों से भगवती टिंबर की ओर बढ़ गया।

जिस समय नेता जी आरामिल पहुंचे, पाण्डेय जी वहीं थे- मिल में। पहले तो उसने रेंजर साहब के बारे में विस्तार से बता दिया, फिर बोला,'वह रेंजर पैसा कमाने के ख्याल से ही पदोन्नति लेकर दूर के इस जंगल में आया है, कि वह सरकारी बंगला में अकेले रह रहा है, कि दो बेटियां भी शादी करने को हैं, आदि-आदि।

'तब तो चलकर उनसे मिलना चाहिए।' पाण्डेय जी ने कहा। उसने खुशी में चहकते हुए कहा,' प्यासा को तो कुआं के पास जाना ही होगा, सर।'

'तो ठीक है। कल शाम को चला जाए। मिलने से ही पता चलेगा कि उनके साथ कैसे निबहेगा।....आप शाम तक यहां पहुंच जाएंगे।'

पाण्डेय जी का फैसला नेता को अच्छा लगा। फिर तो दोनों शराब पीने में व्यस्त हो गये और रेंजर साहब के बारे में बतियाने में।

गोधूलि के बाद ही पहुंचे थे दोनों। राय साहब सांध्य-क्रिया से निवृत होकर बाहर ही टहल रहे थे। दूर से ही बिसु नेता ने दोनों हाथ जोड़कर 'जोहार' कहा। तब तक पाण्डेय जी ने भी अपना दोनों हाथ जोड़ दिया था, फिर अंदर आये।

'सर!' परिचय का सिलसिला शुरू करते हुए पाण्डेय जी ने कहना शुरू किया, 'मैं बबन पाण्डेय एक मामूली-सा टिंबर मरचेन्ट हूं।... ये बिसु लकड़ा हैं। कई गांवों के पाहना, पर यह तो इनका छोटा परिचय है। दरअसल ये एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं और आदिवासियों के नेता भी हैं। इनकी अनुमति के बिना गांव में पत्ता तक नहीं हिलता।....जब से आपके आने की खबर इन्हें लगी थी तभी से ये आपसे मिलने को बेताब थे। सो हम लोग आपको बिना इत्तिला किए ही आपके दर्शन को आ गये...।'

दोनों के परिचय पाकर राय साहब बहुत खुश हुए। उन्होंने शुक्रिया जताते हुए कहा, 'आप लोगों से मिलकर मुझे भी खुशी हुई।.... नयी जगह है, नया परिवेश। मैं तो थोड़ा अकेलापन महसूस कर रहा था। और इसलिए जरा घबरा भी रहा था।'

'नहीं, सर!' पाण्डेय जी थे,'घबराने जैसी कोई बात ही नहीं है यहां। हम लोग आखिर क्यों हैं? यह तो हमारा सौभाग्य है कि आप हमारे बीच आये हैं।

'जी हुजूर!' इस बार बिसु था,। 'हम लोगों के रहते आपको चिंता नहीं करनी है, हुजूर! बस, जिस चीज़ की जरूरत हो, आर्डर कर देंगे, हुजूर।

'नहीं नेता जी!' तभी पाण्डेय जी ने टोक दिया, 'इसके लिए साहब भला क्या आदेश करेंगे...? क्यों करेंगे...? आप खुद देखिए कि इनकी आवश्यकताएं क्या-क्या हैं।...तदनुसार आपूर्ति की बात सोचिए...।'

'हां, सर! जी सर!! यही तो हम लोगों को सोचना है, सर।' 'तत्काल इन्हें एक घंगरीन ला दीजिए। अब मैं देखता हूं कि साहब के लिए क्या-क्या कर सकता हूं।'

'हां, सर!' बिसु ने सिर हिलाते हुए कहा, 'बस, एक-दो दिन में मैं एक घंगरीन की व्यवस्था कर देता हूं, सर।'

' अब हमें इजाजत दीजिए, सर।' पाण्डेय जी ने दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा। राय साहब भी उठ गये। तीनों बंगले का हाता पार कर गये थे। गाड़ी कहीं लगी थी दोनों बैठ गये। गाड़ी फुर्र हो गयी। राय साहब भी वापस आ गये।

जंगलों-पहाड़ों से घिरे इस वनांचल में सुबह तो देर से आती हैं, पर शाम वक्त से पहले ही धरती को अपनी गिरफ्त में ले लेती है। फिर शुरू होता है वन्य-प्राणियों का विहार व तुमुलनाद कभी सुमधुर तो कभी कर्णकटु।....अभी धूप के फूल धरती पर ठीक से खिले भी नहीं थे कि बंगले के हाते में एक ऑटोरिक्शा आ लगी जिस पर गुलाबी रंग का एक रेफ्रिजरेटर लदा था। राय साहब बाहर ही नल पर ब्रश कर रहे थे। चालक ने करीब आकर कहा, 'सर! पाण्डेय साहब ने भेजा है।'

उन्होंने साश्चर्य कहा, 'अंदर रख दो।' दोनों उसे अंदर रखने लगे। जब दोनों जाने लगे, तो राय साहब ने सौ का एक नोट उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, 'बच्चों के लिए मिठाई ले लेना।' दोनों नमस्कार कर खुशी-खुशी चले गये।.... राय साहब अंदर आये। उन्होंने पहले तो रेफ्रिजरेटर को ध्यान से देखा, फिर उसे खोला। उनके सुखद आश्चर्य की सीमा नहीं थी। अंदर वे सारे सामान भरे-पड़े थे जिन्हें उसमें रखा जा सकता था और जितने कि उसमें अंट सकते थे। उन्होंने उसे बंद कर दिया और स्नान की तैयारी में लग गये। वे आज बहुत खुश थे।... जब तक वे स्नान-पूजा और नाश्ता कर तैयार हुए, गाड़ी आ गयी थी। आज वह अपने क्षेत्र का मुआयना कर लेना चाहते थे। वापस आये तो शाम ढल रही थी।

अभी वह फ्रेश भी नहीं हुए थे कि पाण्डेय जी आ धमके। साथ में बिसु नेता भी था। दुआ-सलाम के बाद ही बिसु ने सूचना दी, 'बधाई हो हुजूर! आपके लिए घंगरीन की व्यवस्था हो गयी है। वह कल सुबह आपकी सेवा में पहुंच जाएगी। वह सुबह आएगी और शाम ढले लौट जाएगी।'

राय साहब के लिए इससे बड़ी प्रसन्नता की बात और क्या हो सकती थी। उन्होंने शुक्रिया जताते हुए कहा, ' मैं जितना सोचता हूं उससे कहीं ज्यादा आप लोग मेरे लिए कर देते हैं।... अब मुझे लगने लगा है कि मैं यहां निश्चिंत होकर नौकरी कर सकूंगा। मेरे भले के लिए सोचने वाले तो आप लोग हैं न।'

'क्यों नहीं सर! अवश्य सर!' अचानक पाण्डेय जी के मुख से निकल पड़ा' 'हम लोग आपको किसी तरह की तकलीफ नहीं होने देंगे, सर।'

अब तक राय साहब कुर्सी से उठ चुके थे। चलते-चलते ही वह बोले, 'आप लोगों से मेरी भी यही उम्मीद है।' वह फ्रिज से शराब की बोतल, भुने हुए नमकीन काजू, बर्फ, गिलास आदि निकाल कर ले आये। जब बिसु ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा, तो उन्होंने मुस्कराती आंखों से पाण्डेय जी की ओर देखा, फिर बोले, 'कुछ मत सोचिए नेता जी। यह सब पाण्डेय जी की मेहरबानी है।...'त्वमेव वस्तु गोविंद त्वमेव समर्पयामी।' तीनों ने एक साथ ठहाका लगाया, फिर गिलास टकराए और शराब की दुनिया में डूब गये।

बिसु ने अपना गिलास होंठों से हटाते हुए

कहा, 'जानते हैं ए हुजूर! नये दारोगा जी आये हैं। सुनने में आया है कि वे गश्ती पर ज्यादा ध्यान देते हैं।' उन्होंने थोड़ा दबे जुबान से आगे कहा, 'आपही की बिरादरी के हैं, हुजूर।... बी.बी.राय नाम है। पैसे को कसकर पकड़ते हैं।... यदि आप थोड़ा इशारा कर देंगे, तो पाण्डेय जी पटा ही लेंगे उन्हें। और सच तो यह है कि इस तरह का धंधा तो मिल-जुलकर ही किया जा सकता है न, हुजूर..।'

'ठीक है।' राय साहब ने स्वीकृति में अपना सिर हिलाते हुए कहा, 'मैं उनसे बतिया लूंगा। आप लोग बिल्कुल निश्चिंत रहें। जब चांदी का जूता सिर पर पड़ता है तो बड़े-बड़ों की अकल घास चरने चली जाती है।'

'हम सब इस खेल में निपुण हैं, फिर डर काहे का...?' पाण्डेय जी थे।

सबकी अपनी सांध्य-भाषा थी जिसे सब समझ रहे थे। बातचीत प्रासंगिक थी और सार्थक भी। इसलिए खाने-पीने का स्वाद ही बढ़ गया था। तभी एक फॉरेस्ट गार्ड वहां दौड़ता-हकलाता आया, सर...! अभी-अभी एक ट्रक अंदर को...।' वह हठात् चुप लगा गया। वह कांपने लगा था। शायद डर से और इसीलिए अंत के शब्दों को चबा गया था।

परन्तु रेंजर साहब उसकी भावना को समझ गये थे। उन्होंने पहले बिसु और फिर पाण्डेय जी की ओर देखा। आंखों ही आंखों में कुछ बातें भी हुईं। फिर तो उन्होंने रक्तिम आंखों से गार्ड की ओर देखते हुए कहा, 'ठीक है...ठीक है सब तुम जाओ! ठीक से ड्यूटी भंजाओ!!'

गार्ड थोड़ा थकमकाया,। आश्चर्य से रेंजर साहब की ओर देखकर कुछ बुदबुदाया और चला गया।

अब तक शराब ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया था, तीनों बहकने लगे थे। लेकिन वे लोग न तो गिलास छोड़ पा रहे थे और ना ही बोतल। तीनों इस तरह खाने-पीने पर टूटे पड़े थे जैसे उन्हें बहुत दिनों बाद ये सब चीजें खाने-पीने को मिली हैं। तभी बिसु ने अपने मुंह की भंगिमा बिगाड़ते हुए कहा, 'मजा आ गया हुजूर!! मन अघा गया। लगता है जैसे जन्नत में हूं...!!!'

'आज तो रिहर्सल है, नेता जी।' पाण्डेय जी थे, 'असल मजा तो तब आएगा, जब आप राय साहब की सेवा-टहल के लिए एक दाई ला देंगे और हम लोग उसके हाथ के बने मटन का स्वाद शराब के साथ लेंगे। लेकिन यह सब तो तब होगा जब राय साहब की दया-दृष्टि बनी रहेगी।'

'चिंता की कोई बात नहीं।' इस बार राय साहब ने अपना मुंह खोला, 'अरे सालवन का यह विशाल जंगल हमारा है। यदि सौ पच्चास पेड़ निकल ही जाएंगे तो क्या फर्क पड़ेगा? जैसे सागर में सौ बूंद जल...।' वह मुस्कराए और फिर गिलास की पूरी शराब एक ही सांस में गटक गये।

पाण्डेय जी बहुत खुश हुए। धीरे से बोले, 'हम लोग तो साहब की इसी कृपा के मुंहताज हैं। क्या नेता जी...?'

'हां, हुजूर! साहब का दिल तो दरिया है। जितना मोती बटोरना है, बटोर लें...। फिर न जाने कैसा वक्त आ जाए...। 'तीनों ने एक साथ ठहाका लगाया।

शराब का दूसरा दौर शुरू हो गया जो देर तक चलता रहा। छककर पी लेने के बाद वे दोनों तो गाड़ी में लदकर चले गये; पर रेंजर साहब ऐसे धुत्त हुए कि उस रात उन्हें दुनिया-जहान की कुछ खबर नहीं रही...। उस रात साल-वन के कितने पेड़ कटे, उसका हिसाब करने वाला भी कोई नहीं था...।

पूरा गांव शहर को उलट पड़ा था। सरहुल पूजा और जुलूस। झारखण्ड का सब से बड़ा त्योहार। प्रकृति की पूजा का अनूठा पर्व। अल्हर किशोरियों का मदमस्त नृत्य।... उसी सुबह को बिसु नेता उस घंगरीन को साथ लेकर आ पहुंचा था राय साहब के बंगले पर जिसे देखकर राय साहब जैसे सम्मोहित हो गये थे।. ..तभी बिसु ने टोक दिया, 'यही है हुजूर! आज से यह आपकी सेवा में रहेगी!!' उसने उसे समझाते हुए कहा, ' देखरी मइयां! ई जंगल केर बड़ साहब हे कै। मन से इनकर सेवा करबै। कोनो किसिम की गलती नो होयक चाही...।' वह मौन थी। सिर झुकाए सहमी-सिकुड़ी नीचे ही देख रही थी।... काले गुलाब की पंखुड़ियों जैसे अधर-पल्लव, मृगशाविका की जैसी आंखें, काले-घने कमर तक लटके बाल, लंबी गरदन, तराशी हुई दोनों बाहें, आकर्षक व्यक्तित्व...।' राय साहब अभी भी उसे ही निहार रहे थे। तभी बिसु ने आगे कहा, 'बहुत गरीब है, हुजूर। जो खेत-बाड़ी थी, दिकुओं-महाजनों ने हड़िया-दारू पिलाकर कौड़ी के भाव हड़प लिया था। अब तो रोटी के लाले पड़े रहते हैं। सारा दारोमदार बूढ़ी मां की कमाई पर टिका है। पर वह भी भला दोना-पत्तल बेचकर कितनी कमाई कर जाएगी। एक शाम चूल्हा गरम होता है, तो दूसरी शाम रोता रहता है. ..।' बिसु एक ही सांस में सारा कुछ बोल गया था, फिर खैनी की पीक फेंकने को बाहर निकल आया था।

'...सोने का टुकड़ा, मिट्टी- ढके होने के कारण लोगों के ध्यान से दूर था।... तभी तो मेरे भाग्य में...।' वह हौले से मुस्कराए।

अब तक बिसु आ गया था। बोला, 'माह पूरते हजार-पांच सौ-जो इच्छा हो थमा देंगे और पर्व-त्योहार पर एक-दो कपड़ा दे देंगे, बस। बाकी दोनों शाम इसका पेट भरता रहे. ..।'

राय साहब का ध्यान अभी भी उसी पर लगा था। वह सिर हिलाते हुए मुस्करा रहे थे। उन्होंने बिसु के कथन को विराम देने के अभिप्राय से कहा, 'अब आप निश्चिन्त हो जाइए नेता जी। यहां इसको किसी तरह की

तकलीफ नहीं होगी।' उन्होंने जेब से पांच सौ का नोट निकालकर उसकी ओर बढ़ते हुए कहा, 'रख लीजिए! बच्चों के लिए कुछ ले लेंगे।

बिसु बहुत खुश हुआ। उसने हाथ जोड़कर कई बार प्रणाम किये और भगवान से उनकी सलामती के लिए दुआ करता हुआ चला गया।

राय साहब ने जब से उसे देखा था, वह उससे बतियाने को बेताब थे। पूछा,

'क्या नाम है तुम्हारा?'

'शांबरी।'

'पिताजी का?'

'श्री बंधन मुण्डा।'

'कितने भाई-बहन हो?'

'दो बहन और दो भाई।'

मधुर आवाज थी-लय से भरी हुई। जैसा रूप, वैसी ही आवाज उन्होंने सांत्वना देते हुए कहा, 'घबराने की कोई बात नहीं। तुम्हारे पिताजी को भी यहीं ऑफिस में रखवा दूंगा।... आओ. .. मेरे पास आओ।' और जब वह ससंकोच उनके करीब आयी, तो उन्होंने उसके बाल सहलाते हुए कहा, 'तुम्हारी यह सुन्दरता ईश्वर की देन है और इसलिए अमूल्य है। इसे संवारकर रखना...। जाओ, पहले नहालो, फिर नाश्ता बनाना।' वह कुछ नहीं बोली और चली गयी। वह देर तक उसे ही देखते रहे और उसी के बारे में सोचते रहे।....इतनी सुन्दर और दिलकश लड़की कैसे गरीबी की धूल फांक रही है! आखिर ईश्वर ने इसे पैदा ही क्यों किया? और यदि पैदा ही किया तो फिर इतने निर्धन परिवार में क्यों? इसकी इस सुन्दरता और जवानी की क्या उपयोगिता रह गयी है...? शायद यह मेरे ही भाग्य में थी...। वह देर तक और न जाने क्या-क्या सोचते रहे थे।

ऋतु-राज वसंत के आ जाने से सोलहों कलाओं से युक्त प्रकृति अपने यौवन के उफान पर थी। बंगले के चारों ओर ढेर सारे पेड़ नवपल्लवों और मंजरों से लदे थे जिनकी भीनी-भीनी खुशबू वातावरण को मदमस्त कर रही थी। लग रहा जैसे नन्दन-कानन का बयार हो।

शांबरी जब स्नान करके लौटी थी तो उसके बदन से वैसी ही खुशबू उन्हें मिली थी। और थोड़ी देर बाद जब वह नाश्ता लेकर आयी थी तो नाश्ते की थाली से भी उन्हें वही खुशबू मिल रही थी।... फुलकी रोटी थाली में, सब्जी कटोरी में, सलाद प्लेट में, दूध और पानी गिलास में। वह नाश्ता परोस फिर से किचेन में चली गयी थी। वह देर तक थाली को निहारते रहे थे और मन ही मन खुश हो रहे थे। तभी शांबरी दूसरी फुलकी लेकर आ गयी थी। सहसा उनकी तन्द्राभंग हुई और वह खाने लगे। गरम-गरम सब्जी और भाप छोड़ती फुलकी। भोजन का स्वाद ही कुछ और था। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि एक आदिवासी लड़की इतना स्वादिष्ट भोजन बना सकती है क्या? जैसा रूप वैसा गुण। उन्होंने शांबरी को भी नाश्ता कर लेने को कहा तथा स्वयं आराम करने चले गये। मन ही मन उन्होंने सोच रखा था कि जब शांबरी नाश्ता कर लेगी तो वह जी-भरकर बतियाएंगे। पर वैसा न हो सका। नाश्ता कुछ ज्यादा हो गया था। वह कुछ पल बाद ही निंदिया गये थे और उनकी नींद टूटी भी तो तब तक हाले में ट्रक ने प्रवेश किया। तथा चालक अंदर आया, 'सर! सामान की लिस्ट है। सामान किधर रखवा दूं।

अचानक राय साहब का माथा ठनका। पर वह बोलते भी तो क्या? कहा, 'अंदर रखवा दो।' और स्वयं सूची से सामान को मिलाने लगे।

बंगले के चारों ओर के छोटे-घने पेड़ों पर शाम के समय पक्षियों की पंचायतें बैठती हैं। वे सब इतना शोर मचाती हैं कि बाहर का कुछ सुनाई भी नहीं पड़ता। शुरू-शुरू में राय साहब को तो यह सब अच्छा नहीं लगता था। तीन-चार रातें तो उन्हें नींद भी नहीं आयी थी। पर धीरे-धीरे वह उस कोलाहल के आदी हो गये थे और चिड़ियां भी उन्हें प्यारी-प्यारी लगने लगी थीं।

अभी उनकी कुर्सी बाहर लगी ही थी कि गेट के पास पाण्डेय जी की गाड़ी आ लगी। साथ में बिसु नेता भी था। उन्होंने खड़े होकर उनका स्वागत किया। अब तक शांबरी ने वहां दो कुर्सियां लगा दी थीं। तीनों बैठ गये। 'आप लोगों ने तो कमाल कर दिया भाई। ट्रक-भर सामान। ट्रक में नहीं अंटा तो ऑटो में और जब ऑटो में नहीं अंटा तो रिक्शा में। समझ नहीं पाता कि किन शब्दों में शुक्रिया अदा करूं।'

'इस में शुक्रिया अदा करने की कहां गुंजाइश है, सर!...जंगल आपका, आरा मशीन और फर्नीचर दुकान मेरी। मतलब की सारी चीजें अपनी। बस, जरूरी सामान बन गये।' वह हौले से मुस्कराए।

राय साहब भी भला क्या जवाब देते? उन्होंने थोड़ा सकुचाते हुए कहा, 'अब देखिए न! नेता जी ने भी एक धंगरीन ला दी। अब तो आप लोगों के कारण मेरा सारा कष्ट दूर हो गया।'

'हम लोग आदिवासी हैं, हुजूर।' नेता जी थे,' जिससे भी मिलते हैं, दिल खोल कर मिलते हैं। अपने अंदर कोई छल-कपट नहीं रखते...।

'अपनी आंखों देख रहा हूं, नेता जी। यही सब तो जानने-समझने के लिए आप लोगों के बीच आया हूं।'

'आपसे भी हम लोगों को बहुत कुछ सीखना है, हुजूर। आप जैसे रेंजर ऑफिसर तो हम लोगों को कभी-कभी भाग्य से ही मिलते हैं, सर।' बिसु था। चुप लगाकर मुस्कराने लगा था।

अब तक शांबरी पीने का सारा सामान वहीं ले आयी थी। प्लेट में भूंजा हुआ काजू भी था। पाण्डेय जी उधर से ही दो प्लेट 'चिकेन-चिली' लेते आये थे जिसे शांबरी ने प्लेट में सजा दिया था। सब में चम्मच और

कांटा भी डाल दिया था। फिर क्या था। तीनों अपनी शाम रंगीन करने लगे। न चाहते हुए भी शांबरी को साकी की भूमिका निभानी पड़ गयी थी। देर रात तक शराब का वह दौर चलता रहा था। इस बीच कई बार सबने शांबरी से भी साथ देने का अनुरोध किया था। पर वह भला क्यों कर अपने होठों से लगाती। हालांकि उसका न पीना लोगों को खल रहा था। पर चूंकि राय साहब चुप थे, इसलिए वे दोनों भी बहक नहीं पा रहे थे। वैसे भी पहली बार थी और वे लोग मान कर चलते थे कि धीरे-धीरे वह भी रास्ते पर आ जाएगी। इसलिए भी वे लोग संयम से काम ले रहे थे।

उस सुबह भी सामान उतारने के बाद ट्रक सीधे सालवन की ओर चली गई थी। उस घटना के बाद से न कोई ट्रक को रोकता-टोकता था और ना ही रेंजर साहब के पास ही कोई दौड़ लगाता था। एक तो साहब का डर, दूसरे सबको अपना हिस्सा मिल जाता था। पाण्डेय जी अब राय साहब से कहीं अधिक ध्यान पेड़ों पर देने लगे थे। उनका मानना था कि कल किसने देखा है, कि जब तक वक्त अनुकूल है, फायदा उठा लेने में ही होशियारी है, कि आज न कल तो इस रेंज ऑफिसर के खिलाफ आवाज़ उठेगी ही, कि संभव है, यही बिसु नेता सबसे पहले हल्ला बोले. ..। फिर तो राय का ट्रांसफर होना ही है।... यदि ट्रांसफर नहीं भी हुआ, तो एम.सी.सी. वाले उठवा ले जाएंगे और फिर लेवी ठोक देंगे। यानि उसके लिए इधर खंदक है तो उधर खाई।'... बिसु का आना-जाना भी बढ़ गया था। पाण्डेय जी से लिफाफा वही लाता था। उसको दोनों ओर से कमीशन मिल जाता था। दोनों खुश थे कि राय साहब का ध्यान जंगल की ओर कम है पर शांबरी की ओर ज्यादा।

शांबरी भी वक्त के साथ खिलती जा रही थी। उसका वह तिल-तिल नूतन हो रहा यौवन रेंजर साहब के हृदय-तल में उतरता जा रहा था। वह उसके रूप- यौवन के गुलाम बनते जा रहे थे।...काले गुलाब की खुशबू है इसमें जो तन-मन को सुरभित करती जा रही है। बार-बार इसे नाक के पास ही रखने की इच्छा होती है।... यदि यह रात को भी यहीं रहती तो कितना मजा आता!' वह देर रात तक लेटे-लेटे यही सब सोचते रहते थे और करवटे बदलते रहते थे।

तभी एक शाम नेता ने टोक दिया, 'हुजूर! यदि रात में दिक्कत होती हो तो क्यों न शांबरी को रात में भी यहीं रहने का इंतजाम करा लिया जाए?'

'अंधा तो चाहे दो आंखें!' पर क्या बोलते वह? नेता ने तो उनके मुंह की बात छीन ली थी और वह एकदम से आश्चर्य-चकित रह गये थे। तभी उसने आगे कहा, 'इसके मां-बाप मान जाएंगे, हुजूर। उन लोगों को तो नोट चाहिए, हुजूर। थोड़ा सा पगार बढ़ा देंगे, बस!'

जिस बात को कहने के लिए वह आज तक हिम्मत नहीं जुटा पाये थे, बिसु उसी बात को चुटकी बजाते बक गया और वह भी पूरे विश्वास के साथ। उन्होंने सफल शिकारी की तरह पांच सौ का एक पत्ता उसकी ओर लहरा दिया, 'आप तो अंतरयामी हैं, नेता जी।... आप उसके माता-पिता से बतिया लीजिए। बाकी मैं संभाल लूंगा...।'

बिसु खुशी-खुशी चला गया। शाम को जब बासो घर को जाने लगी, तो उन्होंने शांबरी को अपने पास बुलाया और पूछा,'तू रात में भी यहां रह सकती है 'मां से पूछना पड़ेगा, सर।' वह जाने लगी।

'ठीक है। कल मां को साथ ही लेती आना। उससे बतिया लूंगा और इस माह का पैसा भी दे दूंगा।' वह चली गयी।

लोग कहते हैं कि यदि स्वर्ग कहीं है तो वह धरती पर हैं और धरती पर यदि स्वर्ग कहीं है तो वह उस वन-क्षेत्र में है जहां प्रकृति अपनी सोलहों कलाओं के साथ रात-दिन अठखेलियां किया करती है। बंगले के चारों ओर प्रकृति का वही खुला प्रांगन था जहां सुबह के समय प्रकृति की शोभा देखते बनती थी।

अभी धरती पर धूप के फूल ठीक से खिले भी नहीं थे कि शांबरी अपनी मां के साथ आ धमकी। सबसे पहले उसने चाय बनायी-बिना दूध की चाय, आदी, गोलकी और तुलसी-पत्ता वाली। चीनी की जगह गुड़। अच्छी लगती थी पीने में। चाय की चुस्की लेते हुए ही उन्होंने उसकी मां से पूछा, ' शांबरी कुछ बताती है? यहां वह तकलीफ में तो नहीं है...?'

'नहीं साहब जी।' उसने चाय का घूंट हलक में उतारते हुए हंसकर कहा, 'यह तो यहां सुख से है!' वह हंसी, 'महीने-भर में ही मनगर हो गयी है।' 'लीजिए...बेटी की इस माह की कमाई।' उन्होंने कपड़े के ऊपर एक हजार रुपये उसके हाथ में पकड़ा दिये।

साड़ी, साया और ब्लाउज तथा सौ-सौ के दस नोट! वह कोहरे के फूल की तरह खिल उठी। जीवन में पहली बार एक साथ इतने रुपये देख रही थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि उन सब को कहां सहेजे और किस तरह साहब को शुक्रिया कहे। भावावेश में झुककर उसने उनके दोनों पांव थाम लिए और उन्हें आंसुओं से धोने लगी।

राय साहब भी भाव-विह्वल हो उठे थे। उन्होंने अपने पांव से उसे अलग करते हुए कहा, 'आपकी बेटी बहुत अच्छी है। तुमने इसे अच्छा संस्कार दिया है। तुम यदि चाहो तो मैं इसे रात में भी यहीं रहने देने को तैयार हूं।' वह कुछ नहीं बोली। शायद कुछ सोच रही थी। तभी उन्होंने आगे कहा, शाम में जब यह काम-धन्धा करके जाने लगती है, तो मेरी चिंता बहुत बढ़ जाती है। मैं रात-भर परेशान रहता हूं। सुबह जब इसे देख लेता हूं तब कहीं जाकर मन को शांति मिलती है। मुझे तो पैसे भी बढ़ाने पड़ेंगे।

उसने तो राय साहब को अपना भगवान

ही मान लिया था। वह भला 'ना' कैसे करती? ऊपर से पैसे भी तो बढ़ रहे थे। उसने स्वीकृति में दोनों हाथ जोड़ दिये और भारी गले से बोली, 'बेसे होई, साहब जी! घरवा में कोन एकर मरद है कि रात-विरात खोजे लगतई है। उसकी बातों से राय साहब को हार्दिक प्रसन्नता हुई और मानसिक संतुष्टि भी हुई। तभी उसने शांबरी को समझते हुए कहा, ' देखरी मइयां! घरे आवेक तोके का काम है? हिये रही के साहेब के मान-सम्मान कर खियाल करबउ...।' अब तक चाय समाप्त हो गयी थी। उसने फिर से दोनों हाथ जोड़कर सलाम किया। और हर्षित-पुलकित जाने लगी।

तब उन्होंने एक बोतल उसकी ओर बढ़ाते हुए, 'यह शांबरी के बाबा के लिए है।. ..और हां, कह देना, हम जल्द ही उसे ऑफिस में रख लेंगे...।'

उसने कृतज्ञता से उनकी ओर देखा, मरद को ऑफिस में रख लेंगे! '...साहब! आप तो मेरे लिए भगवान हैं!' और वह झट से उनके पांव पर झुक गयी।

उन्होंने उसकी दोनों बांह पकड़कर उसे उठाया, 'ठीक है। अब तुम जाओ... शांबरी की चिंता न करना! यह यहां आराम से रहेगी।' वह चली गई।

लोग कहते हैं कि प्रकृति जब हंसती है तब दिन होता है, और जब रोती है तब रात होती है। इसीलिए दिन सुहावन होता है और रात भयावह। लेकिन कभी-कभी। जंगल की रात भी दिन की तरह मनोहारिणी हो जाती है। जैसे आज की रात।

भोजन के बाद जब राय साहब पीने बैठे, तो उन्होंने बड़े प्यार से शांबरी से कहा, 'आज की यह शाम हम दोनों के लिए काफी महत्त्वपूर्ण है। इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम भी साथ दो. ..। पर उसने जवाब नहीं दिया, बल्कि धीरे से मुस्कराई। वह चुपचाप दो पैग तैयार करने लगे। उन्होंने गिलास में बर्फ डालते हुए पूछा, 'शांबरी! मैंने सुना है कि तुम पढ़ी-लिखी भी हो..?'

'बहुत कम...।' उसने अन्यमनस्क भाव से जवाब दिया।

'कहां तक...?'

'दसवीं तक...।'

'आगे की पढ़ाई कैसे छूट गयी?'

'मां ने गांव बुला लिया था।'

'तो क्या तुम कहीं बाहर रहकर पढ़ रही थी?'

'जी, सर।'

'कहां...?'

'दरअसल शहर से एक दीदी आई थी गांव वालों को पढ़ाने के लिए। जब वह जाने लगी थी, तो मुझे भी अपने साथ शहर ले गयी थी...।'

'मां ने गांव क्यों बुलवा लिया था'

'शादी के लिए...।'

'तो शादी हुई?'

'...।' इस बार उसने कोई जवाब नहीं दिया।

'चुप क्यों लगा गयी, शांबरी? क्या मुझे नहीं बताना चाहती?' उन्होंने प्यार से उसके माथे पर हाथ रख दिया।

भला अब वह चुप कैसे रहती? बताने लगी, 'दीदी एक अनाथ बच्चे को पाल रही थी। बिरसा नाम था। साथ रहते हुए उससे मेरी दोस्ती हो गयी थी। जब उसका बी.ए. का रिजल्ट हो गया था, तब एक दिन उसने दीदी से मेरे साथ अपनी शादी का प्रस्ताव रख दिया था। जब मैंने साफ-साफ कह दिया था कि मेरी शादी का फैसला मेरे माता-पिता करेंगे। तब दीदी ने हम दोनों को गांव भेज दिया था। पर बिरसा का प्रस्ताव सुनकर मेरे माता-पिता को तो जैसे सांप सूंघ गया था। पिताजी कांपती आवाज में बोले थे, 'यह असंभव है, बेटी, क्योंकि तुम्हारी शादी वर्षों पूर्व मुखिया के बेटे के साथ तय हो चुकी है।'

'बापूऽ' मारे गुस्सा के मैं कांप उठी थी और चीख पड़ी थी, ' मैं जान दे दूंगी, पर मुखिया के उस नालायक बेटे से शादी नहीं करूंगी...।'

पर पिताजी टस से मस होने को तैयार नहीं थे। उन्होंने वचन जो दे दिया था। तब हम दोनों ने फैसला किया था कि हम दोनों शहर भागकर शादी कर लेंगे। पर ऐसा भी कहां हो सका! शहर जाने से पहले ही एक दिन बिरसा जंगल से ही गायब हो गया था। उसकी लाश तक नहीं मिली थी। यहां तक कि पिताजी को भी धमकी दी जाने लगी थी। बेचारा बाप! 'वह कपसने-सिसकने लगी थी।

राय साहब जब बोतल लेकर बैठे थे, तो उन्होंने शांबरी को भी पिलाने का मन बना लिया था। पर उसकी राम कहानी सुनकर वह खुद पीना भूल गये थे। उन्होंने फिर पूछा, 'इसके बाद क्या हुआ?'

'क्या होना था, सर?' उसने कपसना बंद कर आगे बताया, 'बाप ने डर कर उसी शैतान के साथ मेरा नेह जोड़ दिया था। मैं मूक बछिया की तरह बाप के खूंटे से खुलकर उसके खूंटे से बंध गयी थी। पर यह तो मुझे बाद में पता चला था कि वह मुझसे शादी नहीं बल्कि मेरी ज़िन्दगी बरबाद करना चाहता था।...शादी के सप्ताह दिनों बाद ही, एक रात उसने जी भरकर मारा-पीटा था और घर से निकाल दिया था।' इस बार वह बुक्का छोड़कर रो पड़ी थी।

राय साहब भी कम दुःखी नहीं थे। शराब से भरे गिलास को हाथ में वह बार-बार उसे ही देख रहे थे। जितनी करुणा उसकी आंखों में थी उससे कम उनकी आंखों में नहीं थी। पूछा, 'उसके बाद क्या हुआ?'

उसने अपने को संभाला, फिर कहने लगी, 'दुर्भाग्य ने अभी भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा था। मैं तो फिर से मां की ड्योढी पर लौट आयी थी। पर उसके दूसरे ही दिन, सांप के काटने से उसकी मौत हो गयी थी। फिर तो बिरसा और उसकी मौत का कारण मुझे ही माना जाने लगा। लोग मुझे पैदाइसी डायन कहने लगे। अपना गांव होने के कारण जान तो बच गयी, पर मेरी सारी दुर्गति हो गयी। मैं उपेक्षिता हो गयी। लोग मेरी छाया तक से घृणा करने लगे। मेरे लिए घर से निकलना भी मुश्किल हो गया।...बिसु नेता का तो अपना स्वार्थ था। आप तक पटक गया। गांव वाले तो खुश ही हुए कि मैं गांव से बाहर निकल आयी। रह गयी मां-बाप की बात, तो उनकी भी क्या आपत्ति हो सकती थी। हर माह कुछ पैसे भी तो मिल रहे थे।...सुनती थी, डायन-बिसारिन के बारे में-आज भोग रही हूं। ऐसी औरतों की आज तक किसी न किसी बहाने हत्या की जाती रही है।... मैं जानती हूं, एक न एक दिन मेरी भी हत्या कर दी जाएगी। बस...। गांव में किसी बच्चे-जवान के मरने-भर की देर है...।'...वह इस बार रो पड़ी।

राय साहब ने शराब से भरे गिलास को एक ओर रख दिया, उठकर शांबरी के करीब आये और उसकी पीठ सहलाते हुए कहा, 'करम का लेख कोई मेट नहीं सकता, शांबरी।. .. तुम्हारा भाग्य तो मैं नहीं बचा सकता, पर इतना जरूर कह सकता हूं कि जीवन में सुख-दुख धूप-छांव की तरह आते रहते हैं। अब तुम्हारे दुःख के दिन बीत गये। इसलिए उन बुरे दिनों को एक सपना समझकर भूल जाओ! आज यह बात भी दिमाग से निकाल दो कि तुम एक डाइन-बिसारिन हो...।'

शांबरी कपसना बंद करती हुई बोली, 'आपकी बात मैं समझ रही हूं, मालिक।... पर समाज ने जो घाव दे दिया, जो धब्बा पोत दिया, वह कैसे मिट सकता है?'

'समय बड़ा बलवान होता है। वह बड़े से बड़े जख्म को भी भर देता है।...यह धब्बा भी मिट जाएगा।' उन्होंने उसके आंसू पोंछते हुए कहा, 'आज पूर्णमासी है। चलो, हम लोग आगे तक टहल आते हैं।' उन्होंने हौले से उसका हाथ थाम लिया।

सरोवर के शांत-स्निग्ध जल में चांद खेल रहा था। शीतल चन्द्रिका धरती को नहला रही थी। चलते-चलते शांबरी बताती जा रही थी, 'साल के ये गगन चुम्बी पेड़ देख रहे हैं न! ये बादलों को प्रभावित करते हैं जिससे वर्षा होती है। इतना ही नहीं। ये पेड़ अपने अंदर पानी भी जमा करके रखते हैं। यदि आप चाहे तो इसकी छाल हटाकर पानी ले सकते हैं।... इसकी छाल हटाने से एक तरह का गोंद निकलता है जिसे सुखा देने पर वह धुवन का काम करता है। इसके फल में पाचन-शक्ति होती है।...हमारा सरहुल पर्व मुख्य रूप से प्रकृति का ही पर्व है!'

शांबरी की बातों से राय साहब एकदम से हतप्रभ थे। तभी शांबरी ने आगे पूछ दिया, 'सर...आप तो जंगल के बड़े साहब हैं। क्या साल-वन के पेड़ों की कटाई रोकवा नहीं सकते हैं...?'

राय साहब हठात् चौंक उठे, 'लेकिन तू ऐसा क्यों पूछ रही है?', 'दरअसल जंगल का पेड़ काटना पाप है और उस पाप का प्रायश्चित है कि जितना पेड़ काटा जाए उतना नया पेड़ लगा दिया जाए'।

'शांबरी! यह तू क्या बक रही है?'

'हां... सर।' उसने उसी सहजता से जवाब दिया, 'मैं आपको पुराण की एक लोक कथा सुनाती हूं।... रामायण काल में परशुराम नामक एक महान योद्धा हुए थे। उन्होंने समाज की तब की व्यवस्था जो जन्म के आधार पर जाति और वर्ण-व्यवस्था पर आधारित थी-के विरोध में एक आन्दोलन किया था।...धनुष-यज्ञ के समय जब उनका सामना राम से हुआ था, तो राम ने उन्हें समझाते हुए कहा था, 'आपने अपने इस फरसे से असंख्य मानवों का संहार किया है। अब आप इससे लोक-कल्याण का कार्य कीजिए...।'

राम के उपदेश से परशुराम की आंखें खुल गयी थीं। उन्होंने वनों को काटना, गरीबों-भूमिहीनों को बसाना शुरू कर दिया था। किंतु वे तो अतिवादी थे। उन्होंने वनों को काटना जो शुरू किया था तो अविराम गति से उसे काटते ही चले गये थे।...तभी एक दिन उन्हें पता चला था कि राम पंचवटी में अपना डेरा डाले हुए हैं।

जब वे पंचवटी पहुंचे थे, तो देखा था कि राम अपने हाथों लगाये गये नये पौधों को पानी दे रहे हैं। उन्होंने पहले तो आश्चर्य किया, फिर उन्होंने अपने शिष्यों को समझाते हुए कहा था, 'हम लोग जंगल काटकर बस्ती बसाने का जो कार्य कर रहे हैं, वह जनोपयोगी तो है, परन्तु उसकी भी एक मर्यादा है, जबकि हम लोग अमर्यादित ढंग से जंगल काटते ही जा रहे हैं। यदि इसी तरह जंगल कटते रहे, तो एक दिन यह धरती बिल्कुल नंगी हो जाएगी, और तब प्रकृति में हमारे लिए जीवन के लाले पड़ जाएंगे। राम ने हमें मर्यादित कर्म और आचरण की सीख दी है, अर्थात् हम पेड़-पौधों को केवल काटे ही नहीं अपितु पर्यावरण और प्रकृति की सुरक्षा के लिए नये पौधे भी लगाएं और उनकी देख-भाल भी करें...।'

पूरी कथा सुनाने के बाद शांबरी ने जब राय साहब की ओर देखा तो पाया कि वह कहीं खोए हुए हैं। जब उसने टोका, तो वह बोले,'शांबरी...तुमने आज मेरी आंखें खोल दी। आज जिस पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सारा संसार हाहाकार कर रहा है, हमारे भारत में हजारों साल पूर्व उतना अनूठा प्रयास हो चुका है। सचमुच आज तुमने मेरी आंखें खोल दीं! 'उन्होंने बड़े स्नेह और प्यार से उसके कोमल-चिकने गाल थपथपा दिये, फिर बोले,

'चलो, अब लौट चलें...।' दोनों लौट पड़े।

चलते-चलते ही शांबरी बोली, 'हम लोगों के समाज में ऐसी मान्यता है कि प्रकृति के जितने भी अवयव हैं, उन सब में किसी न किसी देवी-देवता का वास है और ये हमारी रक्षा करते हैं। इसलिए हमलोग इन सबकी पूजा-अर्चना करते हैं।'

'पूजा से क्या मिलता है...?' राय साहब ने उत्सुकता जतायी।

'शांति...मन की शांति।' शांबरी ने झट से जवाब दिया।

'मन की शांति जिसकी प्राप्ति में साधू-महात्मा पूरी जिन्दगी खपा देते हैं जो इन लोगों को प्राकृतिक उपादानों की पूजा से मिल जाती है। धन्य हैं ये लोग।'

अब तक दोनों बंगले के गेट के अंदर आ गये थे। शांबरी जब अंदर दाखिल होने लगी तो किसी चिड़िया की आवाज सुनायी पड़ी-मधुर, सुरीली और मर्म स्पर्शी आवाज। राय साहब ने पूछा, ' कौन-सी चिड़िया है यह?'

'सोन चिरैया!'

'कितनी करुणा है इसकी आवाज में ?'

'यह एक अभिशप्त राजकुमारी है। अपने उस राजकुमार के वियोग में न जाने यह कितनी सदियों से भटक रही है जिसकी हत्या एक राक्षस ने कर दी थी, अपने विरह-संगीत के करुण-सागर में वह पूरी सृष्टि को डूबो दे सकती है'। बोलते-बोलते वह एकबारगी चुप लगा गयी थी। गला भर आया था।

राय साहब भी करुणार्द्र हो उठे थे।'... शांबरी और सोन चिरैया के जीवन की कथा एक जैसी है। तभी तो यह इतना करुणार्द्र हो रही है। अब तक घर का दरवाजा आ गया था। ठमककर राय साहब ने पूछा, 'अपनी शादी के बारे में तुम क्या सोच रही हो?'

'अब तो मैंने शादी-विवाह के बारे में सोचना ही छोड़ दिया है, सर!'

'लेकिन अभी तो तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी पड़ी है...! और अभी का समाज तुम्हें चैन से जीने नहीं देगा।...कभी नहीं...। वैसी स्थिति में तुम कैसे अपने को बचा...।'

'वैसी नौबत नहीं आने पाएगी, मालिक। उससे पहले जान हत दूंगी।' और उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। राय साहब कुछ क्षण चुप-चाप खड़े रहे, फिर अपने कमरे में चले गये। दिमाग में विचारों के तूफान चल पड़े थे।

कई तरह के भोजन थे। जंगली मुर्गा का सालन-रसदार भी और सूखा भी। तीतर और बटेर भी थे। बासमती चावल का भात सादी रोटी भी और सलाद-पापड़ भी। विदेशी शराब के कई बोतल।...सारा कुछ शांबरी ने ही तैयार किया था। पूरा दिवस उसी में निकल गया था। वैसे मदद के लिए राय साहब ने अपने ऑफिस के चपरासी और उसकी पत्नी को भी बुलवा लिया था। बहुत ही स्वादिष्ट भोजन था। शराब भी उम्दा किस्म की। दूसरे राउण्ड में ही सबके सब बहकने लगे थे। शांबरी को खोज रहे थे। दारोगाजी ने तो पूछ भी दिया, 'पाण्डेय जी बता रहे थे कि नेता जी ने आपके लिए एक सुन्दर-सी गुड़िया ला दी है। कहां है वह..? मैं उससे मिलना चाहता हूं...।'

राय साहब को पता था कि आज पार्टी में सब शांबरी को खोजेंगे। पर वह नहीं चाहते थे कि शांबरी उन लोगों-खासकर दारोगा के सामने आये। उन्होंने तपाक से जवाब दे दिया, '...सारा कुछ तो उसी का बनाया हुआ है।...बेचारी बड़े मन से बनायी थी। पर मां की बीमारी की खबर सुनकर गांव चली गयी।

'यह आपने क्या कर दिया?' दारोगा जी ने शराब से भरा गिलास हाथ में थामे ही कहा, 'आपने उसे जाने क्यों दिया? मैं तो आज उसी के लिए विशेष रूप से समय निकालकर आया था। आपने उसे रोका क्यों नहीं?'

'अफसोस तो मुझे भी है, दारोगा जी। बड़ी मुश्किल से मैंने आप लोगों के लिए आज यह पार्टी रखा!'

'और यह भी खाली ही गया।' दारोगा जी ने गिलास पटकते हुए कहा।

'सारा मजा ही किरकिरा हो गया।' पाण्डेय जी थे।

पर बिसु चुप था। आज पहली बार उसे इस बात का एहसास हो रहा था कि शांबरी को राय साहब के हाथों सौंपकर उसने अच्छा नहीं किया। कि यह दारोगा आज निपट जाए, फिर बाकी को तो देख लिया जाएगा...।

खाते-पीते ढेर रात निकल गयी थी। जब सब चले गये, तब शांबरी ने राय साहब से पूछ दिया, 'सर...आज तो आपने मुझे छिपा दिया, पर कल यदि वे लोग फिर ऐसी हरकत करेंगे, तब आप क्या करेंगे?'

'नहीं री शांबरी! फिर ऐसा नहीं होगा। आज तक मैंने तुम से जो सीखा है, उसे मैं आजीवन भूला नहीं पाऊंगा।... मैं कल से इन सबसे तौबा करता हूं...।' और वह झटके से सोने चले गये।

❐❐

*'धर्मशीला कुटीर'*
*ग्राम-अरसण्डे, पत्रा.-बोड़ेया*
*जिला-रांची-835240 (झारखंड)*
*मो.-9430303094*